ISSN2393-8838

Date of Publishing 19th May Vol. No.37 Issue No.5

MAY 2026

Rs.10/-

मासिक

इसलाहे समाज

समाज सुधारक पत्रिका

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तुम में से किसी के तौबा कर लेने पर बहुत प्रसन्न होता है जैसे तुम में से कोई अपनी खोई हुई ऊंटनी के पा जाने पर प्रसन्न होता है। (सहीह मुस्लिम)

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नैतिक शिक्षा

मुहम्मद अज़हर मदनी

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (पैग़म्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि किस चीज़ की वजह से लोग ज़्यादा जन्नत में जायेंगे, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह से डर और अच्छे चरित्र की वजह से, पूछा गया कि किस वजह से लोग ज्यादा जहन्नम में जाएंगे पैगम्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जुबान और शर्मगाह (गुप्तांग)

आप पूरे संसार वालों के लिये दयालू कृपालू और अध्यापक एवं प्रशिक्षक बना कर भेजे गये थे। आप का पवित्र जीवन चाहे वह नबी बनाये जाने से पहले का हो या नबी बनाए जाने के बाद, हर क्षण मानवता को मार्गदर्शन करते हैं यही वजह है कि जब माई आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा से आप के चरित्र, नैतिकता और व्यवहार के बारे में पूछा गया तो उन्होंने फरमाया आप का चरित्र और नैतिकता कुरआन था यानी आप का जीवन कुरआन का व्यवहारिक आदर्श और रूप था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इसी आदर्श को अपनाने में दुनिया व आखिरत की भलाई व कामयाबी है और इसी चरित्र के सहारे हम दुनिया वालों के सामने पैगम्बर हज़रत मुहम्मद की सच्ची छवि पेश कर सकते हैं, जो लोग हमें नफरत की निगाह से देखते हैं हम इसी चरित्र और अच्छे व्यवहार के बलबूत उनको अपने से करीब और उनको अपना समर्थक बना सकते हैं। क्योंकि सदाचार और नैतिकता के अन्दर अल्लाह ने वह प्रभाव रखा है जिस का ऐतराफ बड़े बड़ों ने किया और इस्लाम की खूबियों को स्वीकार किया है। बुखारी में आप के चरित्र को इन शब्दों में बयान किया गया है कि आप न तो बुरे स्वभाव के हैं, न सख्त स्वभाव के, न ही बाज़ारों में शोर व हंगामा करते हैं और न ही बुराई का जवाब बुराई से देते हैं बल्कि मआफी का मामला करते हैं। आप के सेवक हज़रत अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं आप की आदतें सब लोगों से अच्छी थीं और स्वयं पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में से सबसे बेहतर वह है जिस की आदतें सबसे अच्छी हों अतः यह हमारा कर्तव्य है कि हम पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आचरण व व्यवहार को अपनाएं और इसको जन्नत में जाने का माध्यम बनाएं। आप को नबी बनाया जाने से पहले सच्चा और एमानतदार कहा जाता था। आप ने अपने चरित्र एवं व्यवहार से लोगों को प्रभावित किया और हर एक के दुख दर्द के साथी बने रहे। नबी बनाये जाने के बाद जब आप पर अल्लाह की तरफ से पहली वह्य (प्रकाशना) अवतरित हुई तो आप परेशान हो गये लेकिन आप की जीवन साथी हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहो अन्हा ने आप को तसल्ली देते हुए कहा ‘‘हर्गिज़ नहीं आप खुश हो जाएं अल्लाह की क़सम अल्लाह तआला आप को कभी रूस्वा नहीं करेगा, अल्लाह की क़सम आप तो रिश्ता नाता जोड़ते हैं, सच बोलते हैं, लोगों का बोझ सहन करते हैं जरूरतमन्द को कमा कर देते हैं, मेहमाननवाज़ हैं और हक़ के मामले में डट कर मदद करते हैं, उपर बयान की गई हदीस में उसी चरित्र का बयान है जो जन्नत में ले जाने का सबब बनेगा। एक मौक़े पर पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अच्छे स्वभाव और चरित्र वाला इन्सान रोज़ेदार और रात में इबादत करने वाले के स्थान को पा लेता है। अल्लाह से दुआ है कि वह हमें अच्छे आचरण वाला बनाए। आमीन

मासिक
इसलाहे समाज
मई 2026 वर्ष 37 अंक 5
जुलक़ादा 1447 हिजरी

संरक्षक
असग़र अ़ली सलफ़ी

संपादक
मुहम्मद ताहिर

- वार्षिक राशि 100 रुपये
- प्रति कापी 10 रुपये

सम्पर्क
मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90
मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद ताहिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।
सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. अज़ान की फ़ज़ीलत 02
2. दुआ और सब्र की बरकत 04
3. तस्बीह 06
4. हज और उमरा की फज़ीलत 09
5. ईश्दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाएं 11
6. फ़ितनों से सुरक्षित रहने के सिद्धांत 14
7. जैसी संगत वैसा फल 16
8. उम्र में बरकत के कारण 18
9. इस्लाम में ज्ञान का महत्व 21
10. प्रेस रिलीज़ (चाँद दर्शन) 22
11. हसद और जलन के नुकसान हदीस और ओलमा के कथनों की रोशनी में 23
12. अच्छा माहौल और बच्चों का पालन पोषण 25
13. जमाअती ख़बरें 26
14. अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन) 28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com
अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है
वेब साइट:- www.ahlehadees.org

सम्पादकीय

दुआ और सब्र की बरकत

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

जहाँ उन्हें कोई अम्न व भय की सूचना मिली उन्होंने उसे प्रसिद्ध करना शुरू कर दिया हालाँकि यह लोग इसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के और अपने में से ऐसी बातों की तह तक पहुंचने वालों के हवाले कर देते तो उसकी हक़ीक़त वह लोग मालूम कर लेते जो परिणाम निकालते हैं और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुम पर न होती तो गिने चुने चन्द के अलावा तुम सब शैतान के पैरोकार बन जाते'' (सूरे निसा-८३)

अगर हम हर सूचना के पीछे भागते रहेंगे तो शैतान अपना आज्ञाकारी बना लेगा। क्या इससे बड़ा कोई पाप हो सकता है? इस लिये इसको हलके में न लें। इससे भी बदतरीन और हानिकारक बात यह है कि हम मजलूम को जालिम क़रार दे ले जायें और अज्ञानता में जालिम को हीरो बना दें और स्वंय जिम्मेदारों को भी यह आदेश है कि हर सुनी सुनाई खबर पर कान न दें विशेष रूप से उनकी हुकूमत, राष्ट्र और देश व समुदाय से संबन्धित खबर और मामला है तो इस को सरसरी तौर पर लेने के बजाये अल्लाह का आदेश है कि वह छान फटक कर ही अपनी राय रखें या पहल करें। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ऐ मुसलमानो! अगर तुम्हें कोई फासिक़ खबर दे तो तुम इसकी अच्छी तरह से छानबीन कर लिया करो ऐसा न हो कि अज्ञानता में किसी क़ौम को दुख पहुंचा दो। फिर अपने किये पर पछताताप उठाओ।'' (सूरे हुजुरातः६)

किसी भी जंगी हालात और संगीन मामलात में अल्लाह तआला की तरफ रूजू, और उससे दुआ माँगना बहुत ज़रूरी है। अपने हक़ में अपनी मिल्लत और देश के हक़ में और इन मज़लूमों के हक़ में बेहतर और प्रभावी माध्यम अल्लाह तआला के दरबार में आँसू बहाने और गुहार लगाने से ही कुछ काम बन सकता है अल्लाह तआला चाहते हैं कि बन्दा अब भी अपनी सरकशी और हालात की संगीनी को देख कर मेरे आगे सजदा करे, रोये, गिड़गिड़ाये और उसके दिल जो सख़्त और पत्थर बन गये हैं वह नर्म पड़ जायें। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''क्या अब तक ईमान वालों के लिये वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र से और जो हक़ उतर चुका है इससे नर्म हो जायें और उनकी तरह न हो जायें जिन्हें उनसे पहले किताब दी गई थी फिर जब इन पर एक लम्बा ज़माना गुज़र गया तो उनके दिल सख्त हो गये और उनमें से बहुत से फासिक (पापी) हैं'' (सूरे हदीद :१६)

दूसरी जगह अल्लाह तआला ने फरमायाः

''फिर जब उनको हमारी सज़ा पहुंची थी तो उन्होंने विनम्रता क्यों नहीं अपनाई? लेकिन उनके दिल सख़्त हो गये और शैतान ने उनके कर्मों को उनके ख्याल में सुसज्जित कर दिया'' (सूरे अंआमः४३)

पवित्र कुरआन में दूसरी जगह अल्लाह तआला ने फरमायाः

''और हमने उन्हें अज़ाब में

पकड़ा लेकिन फिर भी यह लोग न तो अपने पालनहार के सामने झुके और न ही विन्रमता अपनाई।'' (सूरे मोमिनूनः७६)

यह तो परीक्षा एवं प्रकोप में लिप्त कौमों और गुटों की बात है मगर प्रकोप से सब को नसीहत पकड़नी है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आंधी, तूफान और बारिश के आसार देख कर दुआ एवं विनम्रता का उपदेश करते थे। मआफ़ी की भीक माँगते और रोग व प्रकोप में लिप्त लोगों को देख कर बचने की दुआ करते।

ऐसे हंगामी दौर और जंगी हालात एवं कठिनाइयों के वक़्त में जबकि सदमें और शंकाएं बढ़ रही हैं और अपनों या गैरों पर बुरे हालात पेश आ रहे हैं तो इस पर सब्र करना चाहिये और अल्लाह से सवाब की उम्मीद रखनी चाहिए। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''जिन्हें, जब कभी कोई मुसीबत आती है तो कह दिया करते हैं कि हम तो स्वयं अल्लाह तआला की मिलकियत हैं और हम उसी की तरफ लौटने वाले हैं। (सूरे बक़राः१५६) जंग की मुसीबत विशेष रूप से इस काल में साधारण है और इसके नुकसानात भी बहुमुखी और बहुत ज़्यादा हैं।

ऐसे नाज़ुक और मुसीबत व जंग की घड़ी में इंसान को पक्षपात, तंगनज़री और जानिबदारी से बचना चाहिये और किसी को लांछन, अपराधी, कायर और निर्दोष ठहराने से पहले छानबीन करनी चाहिए, आपसी बहस व मुनाज़रा और झगड़ों से बचें और जाहिली नारों व पक्षपात, कपटाचार और हसद व जलन से बचें। हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को '' ऐ काले के बेटे'' कहने पर पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने टोका और कहा कि ऐ अबू ज़र! तुम ऐसे आदमी हो कि जिसके अन्दर से पक्षपात और जाहिलियत की बू आ रही है।

ऐसे फ़ितनों और जंगों के ज़माने में इन्सान उनका लुक़म-ए-तर होने के बजाये ज़्यादा से ज़्यादा इबादत में व्यस्त रहे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः फितनों के ज़माने में इबादत करना मेरी तरफ हिजरत के समान है (सहीह मुस्लिम) फितनों के जमाने में और क़त्ल व गारतगरी और हालात के कठिन और अस्पष्ट होने की सूरत में इन्सान इबादत के लिये स्वयं को व्यस्त कर ले। यह इस लिये कि फितनों के ज़माने में इन्सान इबादत, अल्लाह के ज़िक्र और अच्छे कामों से धीरे धीरे दूर होने लगता है और अधिकतर इस में लिप्त होकर गफलत और हालात के मार का शिकार हो जाता है हमारे पूर्वजों का यही तरीक़ा रहा है और फ़ितनों के ज़माने में ऐसा ही करने का आदेश व प्रेरणा है। इबादत में सदक़ा व ख़ैरात ज़्यादा से ज़्यादा करे। (इब्ने हिब्बान) सुबह शाम दुआओं का एहतमाम करे और हालात लाख विभिन्न हो निराशाजनक हो आह व वावैला हर्गिज़ न करें।

देखो याकूब अलैहिस्सलाम को वह अल्लाह से कितना अच्छा गुमान किये हुए हैं और सख्त निराशा की स्थिति में भी अल्लाह पर भरोसा को दिल व दिमाग में बिठाए हुए हैं और बेटों को नसीहत कर रहे हैं कि कभी भी अल्लाह की रहमत से निराश मत होना, प्रयास और दुआएं सब जारी रखना ''ऐ मेरे प्यारे बच्चो तुम जाओ और यूसुफ और उसके भाई की पूरी तरह तलाश करो और अल्लाह की रहमत से निराश न हो यकीनन रब की रहमत से निराश वहीं होते हैं जो काफ़िर होते हैं।

❑❑❑

तस्बीह

प्रो० डा० मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आज़मी

'तस्बीह' एक इस्लामी पारिभाषिक शब्द है, जिसका अनुवाद किसी और भाषा में करना कठिन है, क्योंकि किसी और धर्म में 'तस्बीह' का वह अर्थ पाया ही नहीं जाता जो कुरआन में आया है। इसलिए कि हर धर्म में किसी न किसी प्रकार से 'शिर्क' पाया जाता है और 'तस्बीह' शिर्क के विरूद्ध अल्लाह के एक होने का वर्णन है। इसलिए समझने के लिए इसका अर्थ है अल्लाह की पवित्रता और महिमा का हर प्रकार के शिर्क से रहित होकर वर्णन करना। चूंकि वही सारी सृष्टि का रचयिता है, इसलिए किसी न किसी प्रकार से सारी सृष्टि ही उसकी 'तस्बीह' कर रही है, उसका गुणगान अथवा महिमागान कर रही है।

फरिश्तों द्वारा अल्लाह की तस्बीह

जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा, मैं धरती में खलीफ़ा बनाने वाला हूं उन्होंने कहा, क्या उसमें तू उसे नियुक्त करेगा जो उसमें बिगाड़ पैदा करेगा और रक्तपात करेगा? जबकि हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरी तस्बीह (गुणगान) करते हैं, और तेरी पवित्रता का वर्णन करते हैं।'' उसने कहा, मैं वह जानता हूं जो तुम नहीं जानते। (सूरा-२, अल बक़रा, आयत-३०)

क़ियामत के दिन तुम फ़रिश्तों को देखोगे कि वे अर्श (अल्लाह के सिंहासन के) चारों ओर घेरा बांधे हुए हैं, अपने रब की प्रशंसा के साथ तस्बीह गुणगान कर रहे हैं। सूरा-३६, अज जुमर, आयत-७५

''तथा हम पंक्तिबद्ध खड़े हुए हैं। और उसकी तस्बीह कर रहे हैं।'' (सूरा-३७, अस साफफ़ात, आयतें १६५-१६६)

बादलों द्वारा अल्लाह की तस्बीह

गरजते बादल और भय खाए हुए फ़रिश्ते उसकी प्रशंसा के साथ 'तस्बीह' कर रहे हैं। (सूरा-१३, अर-रअद, आयत-१३)

पहाड़ों द्वारा अल्लाह की तस्बीह

हमने पहाड़ों को उस (अर्थात दाऊद) के साथ लगा दिया था कि सन्ध्या समय, और प्रातः काल तस्बीह करते रहें। (सूरह-३८, सॉद, आयत-१८)

पक्षियों द्वारा अल्लाह की तस्बीह

क्या तुमने देखा नहीं कि जो कोई भी आकाशों और धरती में है, अल्लाह की तस्बीह गुणगान कर रहा है और पंख फैलाए हुए पक्षी भी? हर एक अपनी बंदगी और तस्बीह से परिचित है और अल्लाह जानता है जो कुछ वे करते हैं। (सूरा-२४, अन-नूर, आयत-४१)

अर्थात सारी सृष्टि ही उसकी तस्बीह कर रही है। परन्तु हम उनकी तस्बीह को समझते ही नहीं सतों आकाशों और धरती और जो कोई उनके बीच है सब उसकी तस्बीह (महिमागान) करते हैं। और ऐसी कोई चीज़ नहीं जो उसकी प्रशंसा के साथ तस्बीह न करती हो। परन्तु तुम उनकी तस्बीह को समझते नहीं हो। निस्सन्देह वह बड़ा ही सहनशील और क्षमा करने वाला है। (सूरा-१७, बनी-इसराईल, आयत-४४)

तस्बीह को कुरआन तथा सहीह हदीसों में हमारा वास्तविक उद्देश्य बताया गया है।

''उन घरों में, जिनको ऊंचा करने और जिनमें अपने नाम को

याद करने का अल्लाह ने आदेश दिया है, ऐसे लोग प्रभातकाल तथा सायंकाल अल्लाह की तस्बीह करते हैं, जिन्हें अल्लाह की याद और नमाज़ क़ायम करने और ज़कात देने से न तो व्यापार गाफ़िल करता है न क्रय विक्रय वे उस दिन से डतरते हैं जिसमें दिल और आँखें विकल हो जाएंगी।'' (सूरा-२४, अन-नूर, आयतें-३६,३७)

घरों को उच्च करने का अर्थ है मस्जिदें बनाना, जहां इबादत के साथ अल्लाह की तस्बीह की जाती है। यह तो उन सदाचारियों का वर्णन है जिनके दिल हर समय अल्लाह की याद में मग्न रहते हैं और उसकी तस्बीह बयान करते हैं जो यह है सुबहानल्लाह, सुबहानल्लाह अर्थात सारी पवित्रता और महिमा केवल अल्लाह के लिए है, कोई उसका साझी नहीं है। लेकिन जो लोग उसकी पवित्रता और महिमा को नहीं पहचान पाते और उसकी अनुभूति नहीं कर पाते, किसी न किसी जीवधारी को उसका साझी बना बैठते हैं। जैसे किसी ने किसी को उसका बेटा बना दिया।

जैसा कि कुरआन में है।

''यह उसकी महिमा के विरूद्ध है कि उसका कोई बेटा हो, जबकि आकाशों और धरती में जो कुछ है उसी का है, और अल्लाह का कार्यसाधक होना काफ़ी है।'' (सूरा-४, अन-निसा, आयत-१७१)

कहते हैं कि अल्लाह औलाद रखता है। महिमावान है वह! बल्कि वे तो उसके प्रतिष्ठित बन्दे हैं। (सूरे-२१, अल-अंबिया, आयत-२६)

अर्थात जिनको ये लोग अल्लाह के बेटे समझ बैठे हैं वे तो उसके प्रतिष्ठित फरिश्ते हैं, जो उसकी तस्बीह में लगे हुए हैं। इन पथ-भ्रष्टों ने इसी को पर्याप्त समझा बल्कि अल्लाह की बेटियाँ भी बना डाली। कुरआन में है-

''वे अल्लाह के लिए बेटियाँ ठहराते हैं महान और उच्च है वह और अपने लिए वह, जो वे चाहें।'' सूरा-१६, अन-नह्ल, आयत-७५)

अर्थात् अरब के मुशरिक स्वयं अपने लिए बेटियों को पसन्द नहीं करते थे, परन्तु उन्होंने अल्लाह की बेटियाँ बना रखी थीं, जिनकी पूजा करते थे। अल्लाह तो बड़ा ही महिमावान है और पवित्र है इस बात से कि वह अपने लिए बेटियाँ बनाकर रखे। जब ऐसी बात है तो अल्लाह की तस्बीह हर समय करनी चाहिए, उससे अचेत नहीं रहना चाहिए। इसलिए कुरआन में बार-बार इसकी चेतावनी आई है। (देखिए: सूरा-३, आले इमरान, आयत-४१, सूरा-२०, ताहा, आयत-१३०, सूरा-४०, अल मोमिन, आयत-५५) इत्यादि। इसी लिए मुसलमान हर नमाज़ में रूकूअ की दशा में 'सुबहा-न रबियल-अज़ीम' और सजदे की दशा में सुबहा-न रबियल-आला पढ़ते हैं। अर्थात मैं महान रब की तस्बीह बयान करता हूं।

इस प्रकार तस्बीह के द्वारा अल्लाह ने शिर्क के सारे दरवाज़े बन्द कर दिए, क्योंकि तस्बीह भी इबादत है और यह तस्बीह भी केवल अल्लाह के लिये ही की जा सकती है। अल्लाह ने विभिन्न अवसरों पर अपने नबी स० को भी तस्बीह का आदेश दिया है। जैसा कि कुरआन में है:

''जब अल्लाह की सहायता आ जाए और विजय प्राप्त हो, और तुम देखो कि लोगों के दल के दल अल्लाह के धर्म में प्रवेश कर रहे हैं तो प्रशंसा के साथ अपने रब की तस्बीह करो, और उससे क्षमा मांगो। निस्सन्देह वह तौबा स्वीकार करने

वाला है।'' (सूरा-११०, अन-नस्र, आयतें-१-३)

यह सूरा मक्का-विजय के पश्चात अवतरित हुई। यह वही मक्का है जिससे कठोर हृदय लोगों ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इसलिए निकाल दिया था कि आप उनको एक अल्लाह की इबादत की ओर बुलाते थे। और आज अल्लाह की सहायता से आप विजयी होकर अपने प्रिय नगर को वापस आए हैं और लोग दल के दल इस्लाम में प्रवेश कर रहे हैं। ऐसे अवसर पर आपको आदेश दिया जा रहा है कि अल्लाह की प्रशंसा के साथ उसकी तस्बीह करें, जिसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को विजय प्रदान की, इस्लाम विरोधियों को पराजय का मुंह दिखलाया। अतः आप केवल उस महान हस्ती की तस्बीह करें। सहीह हदीसों में भी तस्बीह की बड़ी महत्वता बताई गई है। एक हदीस में आया है।

''जिसने प्रतिदिन सौ बार कहा, सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही उसके सारे पाप मिट जाएंगे, चाहे वे समुद्र के झाग के बराबर ही क्यों न हों। (सहीह बुखारी, ६४०५, व सहीह मुस्लिम, २६९४)

इसलिए हर मुसलमान को चाहिए कि प्रातः काल तथा सायंकाल, और नमाज़ों के बाद अल्लाह की अधिक से अधिक तस्बीह करे (अर्थात, सुबहानल्लाह, सुबहानल्लाह कहे) ताकि अल्लाह उससे प्रसन्न हो, और तस्बीह की बरकतें उसे इस जीवन में और इस जीवन के पश्चात भी प्राप्त होती रहें। यूनुस अगर अल्लाह की तस्बीह न करते तो क़ियामत तक मछली के पेट में पड़े रहते। जैसा कि कुरआन में है।

तो फिर उन्हें मछली ने निगल लिया, और वह दोषी था। तो यदि वह तस्बीह करने वालों में से न होता तो लोगों के उठाए जाने तक मछली के पेट में होता। (अर्थात क़ियामत तक मछली के पेट में ही पड़े रहते) सूरा-३७, अस-साफ़्फ़ात, आयतें-१४२-१४४) और उनकी तस्बीह तथा दुआ का वर्णन भी कुरआन में आया है।

''मछली वाले को याद करो जबकि वह क्रोधित होकर चल पड़ा, और समझा कि हम उसे न पकड़ेंगे। अन्ततः उसने अंधेरों में से पुकारा, इलाही, तेरे अतिरिक्त कोई ईष्य पूज्य नहीं, निस्सन्देह मैं ही अत्याचारियों में से हूं। तो हमने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली, और उसको दुखों से मुक्त किया, और हम इसी प्रकार ईमान वालों को बचा लिया करते हैं। (सूरा-२१, अल-अंबिया, आयतें-८७,८८)

इससे मालूम हुआ कि पहले के रसूल भी अल्लाह की तस्बीह किया करते थे। जैसे मूसा अलैहिस्सलाम (देखिए, सूरा-७, अत-आराफ़, आयत-१४३) ईसा और देखिये सूरा-५, अल माइदा, आयत-११६) और सबसे बढ़कर यह कि जन्नत में जाने वालों के मुख से सुबहानल्लाह की आवाज़ निकलेगी (देखिएः सूरा-१०, युनुस, आयत-१०) और सहीह हदीस में भी वर्णन आया है कि उनके दिल एक होंगे और प्रातः काल तथा सायंकाल वे अल्लाह की तस्बीह बयान करेंगे देखिए सहीह मुस्लिम, ३८३४ और एक दूसरी हदीस में आया है कि वे तस्बीह इस प्रकार करेंगे जैसे निरन्तर साँस का अन्दर और बाहर आना जाना लगा रहता है। (देखिए सहीह मुस्लिम, ३८३८)

इसलिए किसी मुसलमान को अल्लाह की तस्बीह से गाफ़िल (अचेत) नहीं रहना चाहिए।

❑❑❑

हज और उमरा की फज़ीलत

मौलाना अब्दुल वली

हज इस्लाम का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, जो हर उस मुसलमान पर जीवन में एक बार फर्ज है जो इसका सामर्थ्य रखता हो। अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि पैगंबर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''इस्लाम की बुनियाद पाँच स्तंभों पर कायम हैः (१) इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, (२) नमाज कायम करना, (३) जकात अदा करना, (४) रमजान के रोजे रखना, (५) और यदि सामर्थ्य हो तो खाना-ए-काबा का हज करना।''

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ने एक दिन हमें खुत्बा दिया और फरमायाः ''ऐ लोगो! अल्लाह ने तुम पर हज फर्ज किया है, इसलिए हज करो।''

एक सहाबी ने पूछाः ''ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हर साल?''

आप खामोश रहे, यहाँ तक कि उसने तीन बार पूछा। तब आपने फरमायाः ''अगर मैं 'हाँ' कह देता, तो हर साल हज तुम पर फर्ज हो जाता और फिर तुम उसे पूरा न कर पाते'' (सहीह मुस्लिम)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अकरा बिन हाबिस ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछाः ''ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हज हर साल फर्ज है या जीवन में केवल एक बार?''

आप ने फरमायाः ''जीवन में एक बार, और जो उससे अधिक करे वह नफ्ल है।'' (सुनन अबू दाऊद)

(२) उमरा की फर्जियत

अहले-इल्म के राजेह मत के अनुसार जिस व्यक्ति पर हज फर्ज है, उस पर उमरा भी फर्ज है।

जैसा कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रमाणित हैः ''इस्लाम यह है कि तुम 'ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह' की गवाही दो, नमाज कायम करो, जकात अदा करो और हज व उमरा करो'' (सहीह इब्ने खुज़ैमा)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुनाः ''जिसने अल्लाह के लिए हज किया और हज के दौरान अश्लील बातों और गुनाहों से बचा रहा, वह गुनाहों से ऐसा पाक होकर लौटता है जैसे आज ही अपनी माँ के पेट से पैदा हुआ है।'' (बुखारी १५२१)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अम्र बिन आस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से फरमायाः ''ऐ अम्र! क्या तुम नहीं जानते कि इस्लाम लाने से पहले के गुनाह माफ हो जाते हैं, हिजरत से पिछले गुनाह मिट जाते हैं, और हज भी पहले के गुनाहों को खत्म कर देता है।'' (मुस्लिम १६२)

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हू बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

"एक उमरा दूसरे उमरे तक के गुनाहों का कफ्फारा है, और हज-ए-मबरूर का बदला सिर्फ जन्नत है।" (बुखारी १७७३, मुस्लिम १३४६)

हज-ए-मबरूर वह हज है जो दिखावे और रिया से पाक हो, केवल अल्लाह की रजा के लिए किया गया हो, हलाल कमाई से किया गया हो, सुन्नत और शरीअत के मुताबिक अदा किया गया हो, और जिसमें गाली-गलौज, लड़ाई-झगड़ा तथा बुरी बातें न हों।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः "रमजान में उमरा करना मेरे साथ हज करने के बराबर है।" (बुखारी १८६३, मुस्लिम १२५६)

अब्दुल्लाह बिन मसऊद बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः "बार-बार हज और उमरा किया करो, क्योंकि ये दोनों गुनाहों और गरीबी को इस तरह खत्म कर देते हैं जैसे भट्टी की आग सोने, चाँदी और लोहे की मैल को निकाल देती है। और हज-ए-मबरूर का बदला जन्नत के अलावा कुछ नहीं।" (सहीह तरगीब ११३३)

आयशा रजियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः "अरफा के दिन से बढ़कर कोई ऐसा दिन नहीं जिसमें अल्लाह तआला इतनी बड़ी संख्या में लोगों को जहन्नम की आग से आजाद करता हो। उस दिन अल्लाह अपने बंदों के बहुत करीब होता है और फरिश्तों के सामने हाजियों पर फख्र करता है और पूछता है ये लोग क्या चाहते हैं?" (मुस्लिम १३४८)

हज और उमरा के लिए निकलने से पहले

१. नीयत को खालिस करें

हज और उमरा के लिए निकलने से पहले अपनी नीयत को दिखावे, शोहरत और रिया से पाक कर लें, क्योंकि कोई भी इबादत बिना इखलास के कबूल नहीं होती।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः "अल्लाह तआला वही अमल कबूल करता है जो सिर्फ उसी के लिए और उसकी रजामंदी के लिए किया गया हो।" (सहीह नेसाईः ३१४०)

२. शिर्क से तौबा करें

शिर्क के रहते कोई इबादत कबूल नहीं होती। अल्लाह तआला ने फरमायाः "अगर वे भी शिर्क करते, तो उनके सारे अमल बर्बाद हो जाते।" (सूरह अल-अनआमः ८८)

३. सुन्नत के मुताबिक हज और उमरा करें

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बताए हुए तरीके के अनुसार हज और उमरा करने का इरादा करें, क्योंकि सुन्नत के ख़िलाफ किया गया अमल अल्लाह के यहाँ कबूल नहीं होता।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः "जिसने ऐसा अमल किया जो हमारे तरीके के मुताबिक नहीं, वह नामंजूर है।" (मुस्लिम १८)

४. गुनाहों से तौबा करें

अपने गुनाहों से सच्ची तौबा करें और जिन लोगों पर जुल्म किया हो उनसे माफी मांग लें।

५. हलाल माल का इस्तेमाल करें

हलाल कमाई से हज और उमरा करें, क्योंकि अल्लाह तआला पाक चीज ही को कबूल करता है।

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें हज और उमरा की तौफीक अता फरमाए और हमें इस्लाम पर कायम रखे।

❑❑❑

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाएं

उमर बिन अबू सलमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से कहा ऐ लड़के खाना खाने से पहले बिस्मिल्लाह कहो और अपने दायें हाथ से खाओ और अपने सामने से खाओ। (बुखारी ५३७६ मुस्लिम २०२२)

नवास बिन समआन रजियल्लल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्यामत के दिन कुरआन, उसके पढ़ने वाले और उस पर अमल करने वालों को लाया जायेगा उस वक्त सूरे बकरा और आले इमरान उस के आगे आगे होगी। (मुस्लिम ८०५)

मअ्किल बिन यसार रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः फितनों के जमाने में इबादत करना मेरी तरफ हिजरत के समान है। (मुस्लिम २९४८)

अबू अय्यूब अनसारी रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया किसी शख्स के लिये यह जाइज नहीं कि अपने किसी भाई से तीन दिन से ज्यादा के लिये मुलाकात छोड़े इस तरह कि जब दोनों का सामना हो जाये तो यह भी मुंह फेर ले और वह भी मुंह फेर ले और उन दोनों में बेहतर वह है जो सलाम में पहल करे। (बुखारी ६०७७ मुस्लिम २५६०)

अबू बकरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब दो मुसलमान अपनी तलवारों को लेकर आमने सामने मुकाबले पर आ जायें तो दोनों जहन्नमी हैं पूछा गया कि यह तो कातिल था और मकतूल ने क्या किया? फरमाया कि मकतूल भी अपने मुकाबिल को कत्ल करने का इरादा किये हुये था। (बुखारी ७०८३ मुस्लिम २८८८)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः उमरा और हज्जे मबरूर का बदला जन्नत है। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जमाही शैतान की तरफ से आती है, इसलिये जब तुम में से किसी को जमाही आये तो अपनी ताकत भर उसे शैतान की तरफ लौटा दे। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमान को जो भी, थकान, बीमारी रंज व गम, तकलीफ पहुचती है यहां तक कि कांटा चुभता है तो अल्लाह इसकी वजह से उसके गुनाहों को मिटा देता है। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

ने फरमायाः अल्लाह तुम में से किसी के तौबा कर लेने पर बहुत खुश होता है जैसे तुम में से कोई अपनी गुमशुदा ऊंटनी के पा जाने पर खुश होता है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम उस वक्त तक जन्नत में नहीं जा सकते जब तक कि ईमान न ले आओ, और उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि एक दूसरे से मुहब्बत न करो। क्या मैं तुम्हें एक ऐसी चीज़ न बताऊं जिसके करने से तुम एक दूसरे से मुहब्बत करने लगो गे? अपने बीच में सलाम को फैलाओ। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः पांचों नमाज़ें और एक जुमा से दूसरे जुमा तक और एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक इनके दर्मियान में होने वाले गुनाहों के लिये कफ्फारा हैं शर्त यह है कि कबीरा गुनाहों से बचा जाये। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रमज़ान के बाद सबसे अफज़ल रोज़ा अल्लाह का महीना मुहर्रम का रोज़ा है और फर्ज़ नमाज़ों के बाद सबसे अफज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने हमारे खिलाफ हथियार उठाया तो वह हम में से नहीं है और जिसने हम को धोखा दिया तो वह हम में से नहीं है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब इन्सान मर जाता है तो उसके कर्म का सिलसिला टूट जाता है मगर तीन चीज़ों की वजह से नहीं टूटता हैः सद-क-ए जारिया, वह ज्ञान जिस से फाइदा उठाया जाये और नेक औलाद जो उसके लिये दुआ करे। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने मुर्दों को लाइलाहा इल्लल्लाह की तलकीन करो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने जान बूझ कर मेरे ऊपर झूठ गढ़ा तो उसका ठिकाना जहन्नम है। (मुस्लिम) अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने नेकी की तरफ बुलाया उसके लिये उसी तरह का बदला है जिसने इस नेकी को अपनाया उनके सवाब से कुछ भी कम नहीं किया जायेगा। और जिसने बुराई की तरफ बुलाया तो उसको उसी जैसा गुनाह मिलेगा जिसने इस बुराई पर अमल किया उनके गुनाहों में से कुछ भी कम नहीं किया जायेगा। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अललाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने घरों को कब्रस्तान न बनाओ, बेशक शैतान उस घर से भाग जाता है जिसमें सूरे बक़रा पढ़ी जाती है। (मुस्लिम) अबू

हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वह शख्स जन्नत में नहीं जायेगा जिसकी बुराइयों से उसका पड़ोसी सुरक्षित न हो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सजदे में बन्दा अपने रब से करीब होता है इस लिये ज्यादा से ज्यादा दुआ करो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स इल्म हासिल करने के लिये चला अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में जाने का रास्ता आसान कर देगा। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक अल्लाह क्यामत के दिन कहे गा मेरे जलाल से मुहब्बत करने वाले कहां हैं, उस दिन मैं उनको अपनी छाया में कर लूंगा, उस दिन मेरी छाया के सिवा कोई छाया नहीं होगी। (मुस्लिम) अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब नमाज़ के लिये इक़ामत कही जाये तो फर्ज़ नमाज़ के अलावा कोई नमाज़ नहीं है। (मुस्लिम)

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं कि आप ने फरमायाः जिसने हमारे दीन में नई बात ईजाद की जो उस से न हो तो वह मरदूद है। (बुखारी-मुस्लिम)

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आप ने फरमायाः अल्लाह के नजदीक सबसे ज़्यादा महबूब आमाल वह हैं जिनको बराबर किया जाये अगर्चे कम हों। (बुखारी-मुस्लिम) आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आपने फरमायाः जिस शख्स ने अल्लाह की फरमाबरदारी के लिये नज़र मानी तो चाहिये कि वह उस की फरमाबरदारी करे और जिसने अल्लाह की नाफरमानी की नज़र मानी तो वह अल्लाह की नाफरमानी न करे। (बुखारी) ***अनुवादः नौशाद अहमद***

इस्लाहे समाज
खरीदारी फार्म

पत्रिका को घर पर मंगवाने के लिये अपने पते में निम्न विवरण ज़रूर लिखें।

नाम......................

पिता का नाम..............

स्थान......................

पोस्ट आफिस..............

वाया......................

तहसील....................

जिला......................

पिन कोड.................

राज्य का नाम.............

मोबाइन नम्बर.............

अपना मनी आर्डर इस पते पर भेजें।

आफिस का पताः**अहले हदीस मंज़िल 4116**, उर्दू बाज़ार, जामा **मस्जिद दिल्ली-6**

बैंक और एकाउन्ट का नामः

Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind

A/c No. 629201058685 (ICICI Bank) Chani Chowk, Delhi-6

RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292

नोटः-बैंक द्वारा रक़म भेजने से पहले आफिस को सूचित करें।

फितनों से सुरक्षित रहने के सिद्धांत

लेखकः शैख अब्दुर्रज़्ज़ाक़ अलबदर

हज़रत मिक़दाद बिन असूवद रज़िअल्लाहो तआला अन्हो का बयान है कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः भाग्यशाली वह है जो फितनों (आज़माइशों और गुमराहियों) से बचा दिया गया। (अबू दाऊद)

अपने और अन्य लोगों के लिये भलाई और शुभचिंतन का तक़ाज़ा यह है कि अल्लाह के बन्दों को फितनों से बचाया जाये। फितनों से दूर रहने की कोशिश और उनसे छुटकारा पाने का प्रयास किया जाए। निम्न सतरों में कुछ बिन्दुओं, महत्वपूर्ण बातों और सिद्धांतों से अवगत करा रहा हूं जिन पर अमल करके फितनों से इन्सान छुटकारा हासिल कर सकता है।

फितनों और उनके नुकसानात से बचने के लिये सबसे अहम चीज़ अल्लाह का तक़वा अर्थात अल्लाह से भय है। इन्सान हर जगह अल्लाह से डरता रहे। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''जो अल्लाह से डरता है अल्लाह तआला उसके छुटकारे की शकल (उपाय) निकाल देता है और उसे ऐसी जगह से रोज़ी देता है जिसका उसे गुमान भी नहीं होता है''। (सूरे तलाक़-२-३)

कुरआन में दूसरी जगह अल्लाह तआला फरमाता है कि जो अल्लाह से डरेगा अल्लाह तआला ''उसके हर काम में आसानी कर देगा'' (सूरे तलाक-४) यानी अल्लाह तआला फितना व मुसीबत से बचने का रास्ता निकाल देगा।

ताबईन के ज़माने में जब फितनों का ज़ोर बढ़ा तो शुभचिंतकों का एक प्रतिनिधिमण्डल हज़रत तलक़ बिन हबीब रह० के पास आया और कहा कि फितनों का दौर दौरा है हम इनसे कैसे सुरक्षित रहें? उन्होंने फरमायाः तक़वा और परहेज़गारी के ज़रिए बचो। लोगों ने पूछा कि तक़वा का अर्थ बता दीजिए फरमायाः अल्लाह के तक़वा का अर्थ यह है कि अल्लाह के आदेशों के अनुसार उसके अज़ाब के डर से उसकी नाफरमानी से बचना, और जिन कामों से अल्लाह खुश होता है उनके द्वारा उसका सामीप्त (तक़र्रुब) हासिल करना ख़ास तौर से फराइज़ और वाजिबात पर अमल करना और पाप से दूर रहा जाए जो ऐसा करेगा उसका अंजाम भला और अच्छा होगा।

फितनों से बचने का एक तरीक़ा यह भी है कि कुरआन व हदीस की शिक्षाओं पर मुकम्मल तौर पर अमल किया जाए क्योंकि कुरआन व हदीस को मज़बूती से थामना दुनिया व आख़िरत में निजात का रास्ता है। इमाम मालिक रहमातुल्लाहि अलैहि ने फरमायाः नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती (नाव) की तरह है जो इसमें सवार हो गया वह कामयाब हो गया और जिसने इसकी सवारी छोड़ दी वह डूब कर हलाक व बर्बाद हो गया'' जो सुन्नत पर अमल करेगा वह हिकमत और बुद्धिमत्ता ही की बात करेगा फितनों से सुरक्षित रहेगा और उसे दुनिया व आख़िरत की भलाइयां हासिल होंगी।

हज़रत इरबाज़ बिन सारिया बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मेरे बाद जो

जिन्दा रहेगा वह बहुत सा इख़्तेलाफ़ देखेगा ऐसी सूरत में तुम्हारे लिये ज़रूरी है कि मेरी सुन्नत और मेरे बाद मेरे हिदायत याफता खुला-फाए राशिदीन के तरीक़े को लाज़िम पकड़े रहना, इसे मज़बूती से थाम लेना और दाढ़ से मज़बूत पकड़ लेना। दीन में नये अविष्कार किये गये कामों से अपने आप को बचाए रखना क्योंकि (सवाब की नियत से किया गया) हर नया काम बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है।

फितनों से बचने का एक तरीका नर्मी और संयम है क्योंकि जल्द बाज़ी कभी भी भलाई का माध्यम नहीं बन सकती जबकि नर्मी और संयम में भलाई और बर्कत होती है, वह अल्लाह के हुक्म से बेहतरीन अंजाम तक पहुंच जायेगा और दुनिया व आख़िरत में भलाई मिलेगी।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहो तआला अन्हो का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कुछ लोग ऐसे होते हैं जो भलाई की चाबी और ताला बनते हैं जबकि कुछ ऐसे होते हैं जो बुराई की चाबी और भलाई का ताला बन जाते हैं उन लोगों के लिये अच्छाई व खुश्खबरी है जिनके हाथों अल्लाह तआला भलाई के काम करा दे और जिनके हाथों से बुराई के काम अंजाम पायें उनके लिये हिलाकत व बर्बादी है। (इब्ने माजा)

फितनों से बचने का एक तरीक़ा यह है कि इख़्तेलाफ और अलग थलग रहने से परहेज़ किया जाये क्योंकि गुटबाज़ी और विखराव बुराई है और सामूहिकता एवं एकता रहमत है। नेकी और परहेज़गारी की बुनियाद पर आपसी सहयोग प्राप्त होता है जिसकी वजह से दुनिया और आखिरत में सौभाग्य हासिल होता है इसके अतिरिक्त इख़्तेलाफात बहुत सी बुराइयों और नुकसानात को जनम देते हैं जिनका अंजाम अच्छा नहीं होता इसी लिये अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जमाअत के साथ जुड़े रहने और गुटबाज़ी और बिखराव से बचने का उपदेश दिया है। फरमायाः जमाअत रहमत है जबकि गुटबाज़ी अज़ाब है। फरमाया जमाअत को लाज़िम पकड़ो और गुटबाज़ी से बचो। एक मौक़े पर फरमाया जमाअत पर अल्लाह का हाथ है। एक और मौक़े पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया इख़्तेलाफ न करो क्योंकि तुम से पहले के लोगों ने इख़्तेलाफ किया तो हलाक व बर्बाद हो गए।"

फितनों से सुरक्षित रहने और बुराई से बचने के लिये एक बड़ा उसूल यह है कि विश्वसनीय ओलमा और इमामों की बात की पैरवी की जाए। फितनों से बचने का एक अहम उसूल यह है कि अल्लाह से रिश्ते को जोड़े रहें और उससे दुआ करता रहें क्योंकि दुआ दनिया व आख़िरत की हर भलाई की कुंजी है। अल्लाह अपने हर मांगने वाले बन्दे को नामुराद और निराश नहीं करता। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है जब मेरे बन्दे मेरे बारे में आप से सवाल करें तो आप कह दें कि मैं बहुत ही क़रीब हूं हर पुकारने वाले की पुकारे को जब कभी वह मुझे पुकारे कुबूल करता हूं। इसलिये लोगों को भी चाहिए कि वह मेरी बात मान लिया करें और इस पर ईमान रखें, यही उनकी भलाई का कारण है।

हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि वह अपने बन्दों को गुमराहियों और आजमाइशों से सुरक्षित रखे ईमान की हिफाज़त फरमाये, हर प्रकार की बुराई से बचाए बेशक वह दुआओं का सुनने वाला है।

❑❑❑

जैसी संगत वैसा फल

सईदुर्रहमान सनाबिली

यह सच है कि इन्सान की पहचान उसके अपने साथियों से होती है, इन्सान अपने दोस्त के आदात और तरीक़ों से बहुत प्रभावित होता है और असर भी डालता है। आप अपने आस पास की समीक्षा करें तो इस हक़ीक़त को आसानी से समझ लेंगे कि नेक लोगों की संगत में रहने वाले इन्सान की दुनिया प्रशंसा करती है, उसे विश्वसनीय और भरोसे मन्द समझती है, ऐसे इन्सान के बारे में सन्देह नहीं किया जाता है, अगर समाज में कोई वारदात होती है तो शक की सूई इस पर नहीं जाती और अगर असमाजिक तत्व इस पर झूठा आरोप लगाते हैं तो इस की तरफ से दिफा करने वाले लोगों की एक बड़ी तादाद मौजूद होती है लेकिन जो बुरे लोगों की संगत में रहते हैं तो समाज के लोग इसे भी बुरी नज़रों से देखते हैं, समाज में ऐसे इन्सान की छवि नकारात्मक हो जाती है। यही वजह है कि इस्लाम धर्म ने अपने अनुयाइयों को अच्छी संगत अपनाने के बारे में पूरे तौर पर मार्गदर्शन और निर्देश दिया है कि किन लोगों की संगत हमारे लिये लाभकारी है, किन लोगों को अपना दोस्त बनाया जा सकता है और वह कौन लोग हैं जिनकी संगत से अच्छे परिणाम की उम्मीद की जा सकती है। इस्लाम ने ऐसे लोगों की निशानदेही की है जिनकी दोस्ती हानिकारक है और यह भी बता दिया कि बुरे लोगों की संगत या साथ रहने से दूर रहना चाहिए।

हमें यह मालूम होना चाहिए कि लोगों के स्वभाव अलग अलग होते हैं कुछ तो भलाई के सन्देश्वाहक होने की वजह से भलाई की तरफ आमंत्रित करते हैं और कुछ लोग बुरे स्वभाव की वजह से बुराई की तरफ खींचते हैं जैसा कि हदीस में भी आया है। पैगम्बर मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः निसन्देह कुछ लोग नेकियों के जारी करने वाले और बुराइयों को बन्द करने वाले होते हैं और कुछ लोग बुराइयों को जारी करने वाले और नेकियों को बन्द करने वाले होते हैं। खुश्खबरी है उस शख्स के लिये जिसको अल्लाह नेकी को जारी करने वाला बना दे और बर्बादी है उसके लिये जिसके हाथों को अल्लाह तआला बुराइयों को जारी करने वाला बना दे। (सुनन इब्ने माजा-२३७ अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को हसन क़रार दिया है।

अबू मूसा अश्अरी रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया नेक साथी की मिसल कस्तूरी बेचने वाले इन्सान जैसी है और बुरा साथी लोहार जैसा है कस्तूरी (खुश्बू) बेचने वाला या खुद से तुझे खुश्बू दे दे गा या तू उससे खरीद लेगा (अगर यह दोनों बातें न हुईं तो) कम से कम तुझे उसकी खुश्बू तो हासिल होती रहेगी। रहा लोहार या तो वह तुम्हारे कपड़े जला दे गा या फिर तुझे नागवार धुवां तो फाँकना ही पड़ेगा। (सहीह बख़ुारी ५५४४, सहीह मुस्लिम ६३८२)

यह हदीस स्पष्ट तौर पर बताती

है कि अच्छे की संगत जहां इन्सान के रहन सहन, तौर तरीक़ा, सोच व फ़िक्र, आदात, चरित्र का पता देती है और अच्छा साथी दीन दुनिया की भलाइयों की प्राप्ति का ज़रीआ है और बुरी संगत और बुरे इन्सान के साथ उठना बैठना या संगत इन्सान के फ़िक्र व ख्याल, तौर तरीक़ा और चरित्र के लिये हानिकारक है और सब पर बुरा असर डालता है। इमाम नौवी रह० ने इस हदीस की व्याख्या करते हुए लिखा है कि इस हदीस में भले लोगों, अच्छे आचरण व स्वभाव रखने वालों, संयमी, ज्ञानी और शिष्ट लोगों के साथ बैठने की फजीलत (श्रेष्ठता) बयान की गयी है और बुरे लोगों, चुगली करने, झूठी और लम्बी चौड़ी बातें करने वालों के साथ उठने बैठने से रोका गया है (शरह सहीह मुस्लिम ६/१८)

हाफिज़ इब्ने हजर अस्क़लानी रह० ने इस हदीस के अन्तर्गत लिखा है कि जिस शख्स की वजह से दीन दुनिया का नुक़सान हो, उसके साथ उठने बैठने से हदीस में मना किया गया है और जिस की वजह से दीन दुनिया का नफा हो उसके साथ बैठने की हदीस में प्रेरणा दी गई है। (फ़तूहुल बारी ४/३२४)

नेक और अच्छे दोस्त के चुनाव का एक अहम फायदा यह है कि नेक लोगों की संगत से इंसान प्रभावित होता है क्योंकि इन्सान के लिये अपने साथी की पैरवी करना स्वभाविक बात है और उसके ज्ञान, अमल, आदात और उसके तौर तरीके से प्रभावित होता है। इस बात की व्याख्या अबू हुरैरह रजिअल्लाहो तआला अन्हो की इस हदीस से होती है जिसमें पैगम्बर मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया आदमी अपने दोस्त के दीन (तौर तरीके) पर होता है इसलिये तुम में से हर एक को सोच समझ कर दोस्त का चयन करना चाहिए (सुनन अबू दाऊद ४८३३, सुनन तिर्मिज़ी २२७८, मुस्नद अहमद ८०४८ अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को सहीह करार दिया है (सहीहुल जामे ३५४५)

यहां यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हमें ऐसे लोगों की संगत अपनानी चाहिए जिनकी एमानतदारी और दीनदारी पर हमें इतमिनान हो। यही वजह है कि सम्माननीय अस्लाफ (पूर्वज) कहा करते थे कि किसी इन्सान के बारे में जानना हो तो उसके दोस्त अहबाब के बारे में जानकारी हासिल कर लो तो उसकी हक़ीक़त मालूम हो जाएगी। अदी बिन ज़ैद रजिअल्लाहो तआला अन्हो अपनी कविता में कहते हैं :

कि आदमी के बारे में पूछने से पहले उसके दोस्तों के बारे में पूछ लो, क्योंकि आदमी अपने दोस्त की पैरवी करता है, जब तुम लोगों में मिल जुल कर रहो तो उनमें से बेहतर शख्स को अपना साथी बनाओ और बुरे को अपना साथी न बनाओ क्यों कि बुरा साथ तुझे भी हलाक कर देगा। (अदबुद दुनिया वद-दीन पृष्ठ १६७)

हम में से हर शख्स को चाहिए कि हम जिस शख्स के साथ उठते बैठते हैं उसके बारे में जांच पड़ताल कर लें कि ऐसा तो नहीं कि उसकी संगत हमारे लिये दीन से दूरी का सबब बन रही है तो ऐसी संगत और दोस्ती को छोड़ कर हमें ऐसे इन्सान से दूर रहने की भरसक कोशिश करनी चाहिए अगर हमने इस की इस्लाह कर ली तो यह अमल हमारे लिये सदकए जारिया साबित होगा। और अगर कोई दोस्ती या संगत इस्लाम से करीब कर रही हो तो हमें ऐसी दोस्ती की कद्र और सम्मान करना चाहिए।

उम्र में बरकत के कारण

मौलाना अब्दुल मन्नान सलफ़ी

उम्र आदि में बरकत अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेमत है। वह अपने बंदों में से जिसे चाहता है, अता करता है। एक मुसलमान के लिए इसे तलाश करना बड़े उद्देश्यों में से है। बरकत का अर्थ है अधिकता, वृद्धि और किसी चीज में भलाई का स्थायी रूप से पाया जाना। और उम्र में बरकत का मतलब यह है कि इंसान अपनी जीवन अवधि में बड़े-बड़े कार्य और अधिक से अधिक श्रेष्ठ काम अंजाम दे, जिन्हें दूसरा कोई न कर सके। लंबी उम्र महीनों और वर्षों की अधिकता से नहीं, बल्कि उसमें बरकत होने से होती है। एक कहावत भी है: बरकत वाला थोड़ा अमल, बिना बरकत वाले अधिक अमल से बेहतर होता है।

कियामत के दिन अल्लाह तआला के सामने बंदे से उसकी उम्र के बारे में सवाल किया जाएगा। जैसा कि हजरत अबू बरजा असलमी रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ''कयामत के दिन किसी बंदे के दोनों पाँव अपनी जगह से नहीं हटेंगे, जब तक उससे यह न पूछ लिया जाए कि उसने अपनी उम्र किन कामों में बिताई, अपने इल्म पर कितना अमल किया, अपना माल कहाँ से कमाया और कहाँ खर्च किया, और अपने शरीर को किन कामों में लगाया।'' (तिर्मिजी)

उम्मत-ए-मुहम्मदिया की उम्र और पिछली उम्मतों की उम्र पर गौर करेंगे तो बड़ा अंतर पाएंगे। हजरत अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ''मेरी उम्मत की उमरें साठ से सत्तर साल के बीच होंगी, और बहुत कम लोग इससे आगे बढ़ेंगे।'' (इब्ने माजा)

१. अल्लाह का तकवा (परहेजगारी)

अल्लाह तआला का फरमान है: ''और अगर उन बस्तियों के लोग ईमान ले आते और परहेजगारी अपनाते, तो हम उन पर आसमान और जमीन की बरकतें खोल देते, लेकिन उन्होंने झुठलाया, तो हमने उन्हें उनके कर्मों की वजह से पकड़ लिया।'' (सूरह अल-आराफ: ९६)

२. अल्लाह का अधिक शुक्र अदा करना

क्योंकि शुक्र नेमतों को कायम रखता है।

अल्लाह तआला फरमाता है:

''यदि तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें और अधिक दूँगा, और यदि तुम नाशुक्री करोगे तो मेरा अजाब बहुत सख़्त है।'' (सूरह इब्राहीम-७)

३. रिश्तेदारों से अच्छे संबंध रखना

यह उन कर्मों में से है जिनसे उम्र में बढ़ोतरी और बरकत होती है।

हजरत अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

''जो व्यक्ति चाहता हो कि उसकी रोजी में बरकत हो और उसकी उम्र लंबी हो, उसे चाहिए कि रिश्तेदारों से अच्छे संबंध रखे।'' (बुखारी व मुस्लिम)

एक दूसरी हदीस में है:

''अपने नसब (वंश) को इतना जानो कि तुम रिश्तों को जोड़ सको, क्योंकि रिश्ते जोड़ने से रिश्तेदारों में मुहब्बत बढ़ती है, माल में वृद्धि

होती है और उम्र बढ़ाई जाती है।'' (तिर्मिजी)

उलमा ने कहा है कि या तो अल्लाह वास्तव में उसकी उम्र बढ़ा देता है, या उसे आफियत देता है, या उसकी मौत के बाद उसके अच्छे असर बाक़ी रखता है। अधिक सही बात यह है कि अल्लाह उसके थोड़े अमल में बरकत दे देता है, जिससे वह कम समय में वह काम कर लेता है जो दूसरे लंबी उम्र में भी नहीं कर पाते।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''अल्लाह तआला ने मख़लूक़ को पैदा किया। जब पैदा करने का काम पूरा हुआ तो 'रहम' (रिश्तेदारी) ने अल्लाह की पनाह ली। अल्लाह ने फरमाया क्या तुम इससे खुश नहीं कि जो तुम्हें जोड़े मैं उसे जोडूँ और जो तुम्हें तोड़े मैं उसे तोड़ दूँ?'' (बुखारी व मुस्लिम)

४. अच्छे अखलाक और पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार

हजरत आयशा रजियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''रिश्ते जोड़ना, अच्छे अखलाक और पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार घरों को आबाद करते हैं और उम्र में वृद्धि करते हैं।'' (मुस्नद अहमद)

एक दूसरी हदीस में हैः

''मोमिन अपने अच्छे अखलाक से रोजेदार और तहज्जुद पढ़ने वाले का दर्जा पा लेता है।'' (अबू दाऊद)

५. माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार

जब अल्लाह ने सिलह-रहमी को रिज़्क और उम्र में बरकत का कारण बनाया है, तो माता-पिता के साथ भलाई करना इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है।

६. दुआ

दुआ से उम्र में बरकत और अमल में सुधार आता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''दुआ के अलावा कोई चीज तकदीर को नहीं बदलती और नेकी के अलावा कोई चीज उम्र में वृद्धि नहीं करती।'' (तिर्मिजी)

मुबारक और बरकत वाले समय

आखिरी रात का हिस्सा (तहज्जुद का समय)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''अल्लाह तआला रात के आखिरी हिस्से में अपने बंदों के सबसे ज़ियादा करीब होता है। यदि तुम उस समय अल्लाह को याद करने वालों में हो सकते हो, तो जरूर बनो।'' (अबू दाऊद, तिर्मिजी)

जुमे का दिन

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''जो व्यक्ति जुमे के दिन गुस्ल करे, जल्दी मस्जिद जाए, शुरू से खुत्बा सुने, इमाम के करीब बैठे और ध्यान से सुने, तो उसके हर कदम के बदले उसे एक साल के रोजे और क़्याम का सवाब मिलेगा।'' (अहमद, तिर्मिजी)

रमजान का महीना और शब-ए-कद्र

अल्लाह तआला फरमाता हैः

''शब-ए-कद्र हजार महीनों से बेहतर है।'' (सूरह अल-कद्र-३)

जिलहिज्जा के पहले दस दिन

इन दिनों में समय की भी फजीलत है और अमल की भी।

हर महीने तीन रोजे

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''जिसने हर महीने तीन रोजे रखे, उसने मानो हमेशा रोजे रखे।''

चाश्त की नमाज

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि चाश्त की नमाज पढ़ने वाले को बहुत बड़ा

सवाब मिलता है और वह कम मेहनत में बड़ा लाभ पाता है। (सहीह इब्ने हिब्बान)

मुबारक स्थानों में इबादत

मक्का और मदीना में नमाज

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

"मेरी मस्जिद में एक नमाज दूसरी मस्जिदों की हजार नमाजों से बेहतर है, सिवाय मस्जिदे हराम के। और मस्जिदे हराम में एक नमाज दूसरी मस्जिदों की एक लाख नमाजों से बेहतर है।" (इब्ने माजा)

जमाअत के साथ नमाज

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

"जमाअत के साथ पढ़ी गई नमाज अकेले की नमाज से सत्ताईस दर्जे बेहतर है।" (बुखारी व मुस्लिम)

वे अमल जिनसे उम्र में बरकत होती है।

१. अल्लाह का जिक्र

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

"जो व्यक्ति सौ बार 'सुब्हानल्लाह' कहे, उसके लिए हजार नेकियाँ लिखी जाती हैं और हजार गुनाह मिटा दिए जाते हैं।" (मुस्लिम)

२. मोमिनों के लिए इस्तिगफार

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

"जो मोमिन मर्दों और औरतों के लिए मगफिरत की दुआ करे, अल्लाह उसके लिए हर मोमिन के बदले एक नेकी लिख देता है।" (तबरानी)

३. दावत इलल्लाह (अल्लाह की ओर बुलाना)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

"जिसने इस्लाम में कोई अच्छा काम शुरू किया, फिर उसके बाद लोग उस पर अमल करते रहे, तो उसे उन सबके बराबर सवाब मिलता रहेगा।" (मुस्लिम)

४. इल्म सीखना और सिखाना

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

"जो व्यक्ति मस्जिद सिर्फ इस नीयत से जाए कि भलाई सीखे या सिखाए, उसे मुकम्मल हज का सवाब मिलता है।" (तबरानी)

५. सद-क-ए-जारीया

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

"जब इंसान मर जाता है तो उसके अमल बंद हो जाते हैं, सिवाय तीन चीजों के सद-क-ए-जारीया, ऐसा इल्म जिससे लोग फायदा उठाएँ, और नेक औलाद जो उसके लिए दुआ करे।" (तिर्मिज़ी)

गुनाहों से बचना

गुनाह बरकत को मिटा देते हैं। इसके कुछ कारण हैंः

गुनाह में लगाया गया समय इबादत में लगना चाहिए था।

एक गुनाह दूसरे गुनाह को जन्म देता है।

गुनाह तौबा की इच्छा को कमजोर कर देता है।

गुनाह नेकियों के सवाब को खत्म कर देते हैं, खासकर जब वे लोगों के हक से जुड़े हों।

अल्लाह तआला फरमाता हैः

"यूँ नहीं! बल्कि उनके दिलों पर उनके कर्मों की वजह से जंग चढ़ गया है।" (सूरह अल-मुतफ्फिफीनः १४)

इमाम हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैंः

"इसका मतलब है गुनाह पर गुनाह, जो दिल को अंधा कर देता है।"

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें उन लोगों में शामिल करे जिनकी उम्र में बरकत हुई, जिनके अमल नेक है और जिनका ख़ातिमा ईमान और भलाई पर हुआ। आमीन।

❑❑❑

इस्लाम में ज्ञान का महत्व

नौशाद अहमद, गाज़ियाबाद

इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो मानव जीवन के हर पहलू में मार्गदर्शन प्रदान करता है। इस्लाम ने केवल इबादत और आध्यात्मिकता पर ही बल नहीं दिया, बल्कि ज्ञान और शिक्षा को भी अत्यधिक महत्व दिया है। ज्ञान को इस्लाम में इंसान की कीमती दौलत माना गया है। कुरआन और हदीस में अनेक स्थानों पर इल्म (ज्ञान) प्राप्त करने की प्रेरणा दी गई है। इस्लाम का पहला संदेश ही ज्ञान से संबंधित था। जब पैगंबर हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पहली वह्य (ईश्वरीय संदेश) उतरी तो उसमें कहा गया ''पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया।'' इससे स्पष्ट होता है कि इस्लाम की बुनियाद ही शिक्षा और ज्ञान पर रखी गई है।

इस्लाम में ज्ञान को अज्ञानता के अंधकार से निकालकर सत्य और प्रकाश की ओर ले जाने वाला माध्यम माना गया है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः कि ''क्या जानने वाले और न जानने वाले बराबर हो सकते हैं?'' इस आयत से यह सिद्ध होता है कि अल्लाह के निकट ज्ञानी व्यक्ति का स्थान बहुत ऊँचा है। ज्ञान मनुष्य को सही और गलत की पहचान कराता है तथा उसे नैतिक और सामाजिक रूप से बेहतर बनाता है।

इस्लाम में शिक्षा केवल धार्मिक ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि संसारिक और वैज्ञानिक ज्ञान को भी महत्वपूर्ण माना गया है। पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''इल्म हासिल करना हर मुसलमान पर फर्ज है।'' इस हदीस में पुरुष और महिला दोनों के लिए शिक्षा को आवश्यक बताया गया है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि इस्लाम स्त्री शिक्षा का भी समर्थक है और कुछ लोगों का यह आरोप सरासर ग़लत है कि इस्लाम औरतों को शिक्षा देने के ख़िलाफ़ है।

इस्लाम के इतिहास में अनेक महान विद्वान हुए जिन्होंने विज्ञान, गणित, चिकित्सा, खगोलशास्त्र और दर्शन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उदाहरण के लिए इब्न सीना ने चिकित्सा विज्ञान में महान कार्य किए। अल-ख्वारज्मी ने गणित के क्षेत्र में क्रांतिकारी योगदान दिया। इसी प्रकार अल-बैरूनी ने खगोलशास्त्र और भूगोल में उल्लेखनीय कार्य किए। इन महान विद्वानों ने यह सिद्ध कर दिया कि इस्लाम ज्ञान और अनुसंधान को प्रोत्साहित करता है।

ज्ञान का महत्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि यह व्यक्ति के चरित्र निर्माण में सहायता करता है। एक शिक्षित व्यक्ति समाज में शांति, न्याय और भाईचारे को बढ़ावा देता है। इस्लाम में अच्छे आचरण को बहुत महत्व दिया गया है और सही ज्ञान इंसान को नैतिक मूल्यों का पालन करना सिखाता है। जब मनुष्य ज्ञान प्राप्त करता है तो उसके अंदर सहनशीलता, विनम्रता और दूसरों के प्रति सम्मान की भावना उत्पन्न होती है।

इस्लाम ने शिक्षकों को भी बहुत सम्मान दिया है। एक शिक्षक समाज

का निर्माता और नई पीढ़ी को सही दिशा देता है। पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम स्वयं एक महान शिक्षक भी थे। उन्होंने लोगों को केवल धार्मिक बातें ही नहीं सिखाईं, बल्कि जीवन जीने और मरने के बाद के जीवन में निजात का सही तरीका भी बताया।

आज के आधुनिक युग में ज्ञान की आवश्यकता और भी बढ़ गई है। विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में प्रगति के लिए शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। यदि मुस्लिम समाज शिक्षा के महत्व को समझे और ज्ञान प्राप्ति की ओर पूरा ध्यान दे, तो वह पुनः विश्व में सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर सकता है। दुर्भाग्य से आज कई स्थानों पर अशिक्षा और अज्ञानता के कारण समाज पिछड़ता जा रहा है। इसलिए आवश्यक है कि हम इस्लाम की शिक्षाओं को समझें और शिक्षा को अपने जीवन का महत्वपूर्ण भाग बनाएं।

इस्लाम में ज्ञान केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि पूरी मानवता की भलाई के लिए प्राप्त करने की प्रेरणा दी गई है। एक सच्चा मुसलमान वही है जो ज्ञान प्राप्त कर समाज की सेवा करे और मानवता के कल्याण में योगदान दे। शिक्षा मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाती है तथा राष्ट्र की उन्नति में भी सहायक होती है।

सारांश यह है कि इस्लाम में ज्ञान का स्थान अत्यंत ऊँचा है। ज्ञान इंसान को सफलता, सम्मान और सही मार्ग प्रदान करता है। कुरआन और हदीस दोनों में शिक्षा प्राप्त करने की प्रेरणा दी गई है। इसलिए प्रत्येक मुसलमान को चाहिए कि वह ज्ञान प्राप्त करे, दूसरों को शिक्षा दे और समाज में सकारात्मक जागरूकता फैलाए। यही इस्लाम की सच्ची शिक्षा है और यही मानवता की प्रगति का मार्ग भी है शिक्षित लोगों की भी ज़िम्मेदारी है कि वह समाज के पिछड़े लोगों में शिक्षा के लिये जागरूकता पैदा करें। आप भी शिक्षा का इतना गेप है जिस की वजह से लोग अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं अतः शिक्षा विद् बड़े स्तर पर शिक्षा के लिये काम करें ताकि हमारे समाज में शिक्षा का अनुपात बढ़े।

❑❑❑

(प्रेस रिलीज़)

ज़िलहिज्जा १४४७ का चाँद नज़र नहीं आया

दिल्ली, १७ मार्च २०२६

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' से जारी अखबारी बयान के अनुसार दिनांक २६ ज़ीक़ादा १४४७ हिजरी अर्थात १७ मई २०२६ को मग्रिब की नमाज़ के बाद अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' की एक महत्वपूर्ण मीटिंग हुई और सफ़रूल मुजफ्फर के चांद को देखने के सिलसिले में यथापूर्व देश के अधिकांश राज्यों की जमाअती इकाइयों के पदध ाारियों और समुदायिक संगठनों से फून के माध्यम से संपर्क किये गये जिसमें विभिन्न राज्यों से चांद को देखने की प्रमाणित खबर नहीं मिली। इस लिये यह फैसला किया गया कि कल सोमवार के दिन ज़ीक़ादा की ३०वीं तारीख होगी और ईदुल अज़हा की नमाज़ २८ मई को अदा की जायेगी।

हसद और जलन के नुकसान हदीस और ओलमा के कथनों की रोशनी में

एन. अहमद

इंसान की जिंदगी में कुछ बुरी आदतें ऐसी होती हैं जो न केवल उसके दिल और दिमाग को खराब करती हैं, बल्कि उसके समाज, रिश्तों और आखिरत को भी नुकसान पहुंचाती हैं। इन्हीं बुरी आदतों में एक बहुत बड़ा गुनाह ''हसद'' यानी जलन है। हसद का मतलब यह है कि किसी दूसरे इंसान के पास मौजूद नेमत को देखकर दिल में यह चाह पैदा हो कि वह नेमत उससे छिन जाए। इस्लाम ने हसद को बहुत खतरनाक बीमारी बताया है, क्योंकि यह इंसान के दिल को काला कर देता है और उसे अल्लाह की तकसीम पर नाखुश बना देता है।

कुरआन और हदीस में कई जगह हसद की बुराई बयान की गई है। अल्लाह तआला ने कुरआन में फरमायाः ''और पनाह माँगता हूँ हसद करने वाले के शर से जब वह हसद करे।'' (सूरह अल-फलक ५)

इस आयत से मालूम होता है कि हसद इतना खतरनाक है कि अल्लाह ने उससे पनाह मांगने की तालीम दी है। हसद करने वाला इंसान दूसरे की खुशी और तरक्की को देखकर दुखी होता है। उसकी सोच हमेशा नफरत, गुस्से और मुकाबले में रहती है। इस वजह से उसका दिल सुकून से खाली हो जाता है।

हदीस की रोशनी में हसद की बुराई

हुजूर हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हसद से बचने की बहुत ताकीद फरमाई है। एक मशहूर हदीस में आपने फरमायाः ''हसद से बचो, क्योंकि हसद नेकियों को इस तरह खा जाता है जैसे आग लकड़ी को खा जाती है।'' (अबू दाऊद)

इस हदीस का मतलब यह है कि हसद इंसान की इबादतों और अच्छे आमाल को बर्बाद कर देता है। जिस तरह आग सूखी लकड़ी को खत्म कर देती है, उसी तरह जलन इंसान के दिल की अच्छाइयों को जला देती है।

एक दूसरी हदीस में रसूलुल्लाह ने फरमायाः ''तुम आपस में हसद मत करो, दुश्मनी मत रखो और एक-दूसरे से मुंह मत मोड़ो, बल्कि अल्लाह के बंदे बनकर भाई-भाई बन जाओ।'' (सहीह मुस्लिम)

इस हदीस से मालूम होता है कि हसद समाज में नफरत और दुश्मनी फैलाता है। जब इंसान दूसरे की तरक्की देखकर जलता है, तो उसके दिल में मोहब्बत खत्म हो जाती है और रिश्ते टूटने लगते हैं।

हसद के दुनियावी नुकसान

हसद करने वाला इंसान कभी सुकून की जिंदगी नहीं जी सकता। वह हमेशा दूसरों की कामयाबी देखकर परेशान रहता है। अगर किसी को इज्जत, दौलत, अच्छी नौकरी या शोहरत मिल जाए तो हसद करने वाला अंदर ही अंदर जलता रहता है। इस वजह से उसकी अपनी खुशियां भी खत्म हो जाती हैं।

हसद का एक बड़ा नुकसान यह है कि इंसान अल्लाह की तकदीर से नाराज रहने लगता है। वह सोचता है कि फलां इंसान को इतनी नेमतें क्यों मिलीं और मुझे क्यों नहीं मिलीं। जबकि मोमिन का काम यह है कि वह अल्लाह के फैसले पर राजी रहे।

हसद इंसान को गुनाहों की तरफ भी ले जाता है। इतिहास में सबसे पहला कत्ल भी हसद की वजह से हुआ था, जब हाबील के भाई काबील ने जलन में आकर उनका कत्ल कर दिया। इससे साबित होता है कि हसद इंसान को बहुत बड़े जुर्म तक पहुंचा सकता है।

ओलमा के कथनों में हसद की बुराई महान इस्लामी विद्वान इमाम गजाली ने फरमायाः ''हसद दिल की ऐसी बीमारी है जो इंसान को अंदर से तबाह कर देती है।''

इमाम गजाली रह० के अनुसार हसद करने वाला इंसान हमेशा बेचौनी में रहता है, क्योंकि उसे दूसरों की खुशियां पसंद नहीं आतीं। उसका दिल नफरत और गुस्से से भरा रहता है।

इब्ने तैमिया रह० ने कहाः ''हसद करने वाला सबसे पहले खुद को नुकसान पहुंचाता है, क्योंकि उसका दिल हर वक्त जलता रहता है।''

यह बात बिल्कुल सही है। जलन करने वाला इंसान दूसरों से ज्यादा खुद परेशान रहता है। वह रात-दिन इसी सोच में रहता है कि दूसरे लोग उससे आगे क्यों बढ़ रहे हैं।

हजरत अली का मशहूर कथन हैः ''हसद करने वाले को कभी आराम नहीं मिलता।''

यानी जलन इंसान के दिल का सुकून छीन लेती है। वह बाहर से चाहे मुस्कुराता रहे, लेकिन अंदर से बेचौन रहता है।

हसद के आखिरत में नुकसान

हसद केवल दुनिया में ही नुकसान नहीं देता, बल्कि आखिरत में भी इंसान के लिए खतरा बन जाता है। हदीस के मुताबिक हसद नेकियों को खत्म कर देता है। अगर किसी इंसान ने बहुत इबादत की हो, लेकिन उसके दिल में जलन और नफरत भरी हो, तो उसका अज्र कम हो सकता है।

इसके अलावा हसद इंसान को गीबत, चुगली और झूठ जैसे गुनाहों में भी डाल देता है। अक्सर लोग जलन में आकर दूसरों की बुराई करते हैं, उनकी इज्जत खराब करने की कोशिश करते हैं और उनके खिलाफ गलत बातें फैलाते हैं। इस तरह एक गुनाह कई दूसरे गुनाहों का रास्ता खोल देता है।

हसद से बचने के तरीके

इस्लाम ने केवल बुराई से रोका ही नहीं, बल्कि उससे बचने के तरीके भी बताए हैं। अल्लाह की नेमतों पर शुक्र अदा करना

इंसान को चाहिए कि वह अपनी नेमतों को देखे और अल्लाह का शुक्र करे। जब इंसान शुक्रगुजार बनता है, तो उसके दिल से जलन खत्म होने लगती है।

दूसरों के लिए दुआ करना अगर किसी को तरक्की मिल जाए तो उसके लिए बरकत की दुआ करनी चाहिए। इससे दिल साफ होता है।

कनाअत और सब्र अपनानाः इंसान को यह यकीन रखना चाहिए कि अल्लाह हर किसी को उसकी जरूरत और हिकमत के मुताबिक देता है। दिल की सफाई की कोशिश करना कुरआन की तिलावत, जिक्र और अच्छी सोहबत इंसान के दिल को पाक करती है।

हसद और जलन इंसान की बहुत खतरनाक नैतिक बीमारी है। यह इंसान के दिल का सुकून छीन लेती है, रिश्तों को खराब करती है और आखिरत को भी नुकसान पहुंचाती है। हदीस और ओलमा के कथनों से साफ मालूम होता है कि मोमिन को अपने दिल को हसद से पाक रखना चाहिए। अगर किसी को नेमत मिले तो उससे जलने के बजाय उसके लिए भलाई और बरकत की दुआ करनी चाहिए। यही इस्लाम की शिक्षा है और यही इंसानी समाज की भलाई का रास्ता है।

अच्छा माहौल और बच्चों पालन पोषण

अल्लाह तआला ने इंसान को अच्छी फितरत के साथ पैदा किया है। हर इंसान सच बोलने वाले, इंसाफ करने वाले और अच्छे अखलाक वाले लोगों को पसंद करता है। इसी तरह झूठ, जुल्म, खयानत, बदतमीजी और बेहयाई को बुरा समझता है। अगर कोई व्यक्ति गलत काम भी करे, तब भी वह यह नहीं चाहता कि दूसरे लोग उसकी बुराई जानें। इससे पता चलता है कि इंसान के दिल में नेकी से लगाव और मोहब्बत फितरी तौर पर मौजूद होती है। अगर बच्चे को अच्छा माहौल मिले तो वह नेक, शरीफ और अच्छे चरित्र वाला बनता है, और अगर उसे बुरा माहौल मिले तो उसकी आदतें खराब होने लगती हैं। माहौल इंसान की जिंदगी पर बहुत गहरा असर डालता है। इंसान जिन लोगों के साथ रहता है, उन्हीं की बातें, आदतें और तरीके सीखता है। अगर दोस्त अच्छे हों तो इंसान अच्छाई की तरफ जाता है, और अगर दोस्त बुरे हों तो इंसान गलत रास्ते पर चल पड़ता है। इसलिए अच्छी संगत को बहुत अहमियत दी गई है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अच्छे दोस्त की मिसाल इत्र बेचने वाले से दी है। अगर उससे इत्र न भी खरीदा जाए, तब भी उसकी अच्छी खुशबू महसूस होती है। इसी तरह बुरे दोस्त की मिसाल भट्ठी जलाने वाले से दी है, जिसके धुएँ से कपड़े और शरीर प्रभावित हो जाते हैं। इस हदीस से मालूम होता है कि इंसान अपने माहौल से जरूर असर लेता है।

बच्चों पर माहौल का असर बड़ों की तुलना में ज्यादा होता है। बच्चा अपने घर में जो कुछ देखता और सुनता है, वही सीखता है। अगर घर में नमाज पढ़ी जाती हो, कुरआन की तिलावत होती हो, सच बोला जाता हो और एक-दूसरे से अदब और मोहब्बत के साथ बात की जाती हो, तो बच्चा भी वही आदतें अपनाता है। लेकिन अगर घर में लड़ाई-झगड़ा, गाली-गलौज, झूठ और बदतमीजी हो, तो बच्चे की परवरिश भी खराब हो जाती है।

आजकल बच्चे ज्यादा समय स्कूल, ट्यूशन और मोबाइल में बिताते हैं। माता-पिता व्यस्त होने की वजह से बच्चों को कम समय दे पाते हैं। इसलिए माता-पिता की जिम्मेदारी पहले से ज्यादा बढ़ गई है। उन्हें चाहिए कि बच्चों के साथ समय बिताएँ, उन्हें दीन की बातें सिखाएँ, नमाज की आदत डालें और अच्छे अख़लाक की तालीम दें।

माता-पिता को चाहिए कि वे खुद भी अच्छा नमूना बनें, क्योंकि बच्चे सिर्फ नसीहत से नहीं बल्कि अमल देखकर ज्यादा सीखते हैं। अगर माँ-बाप सच बोलेंगे, बड़ों का सम्मान करेंगे और नरमी से बात करेंगे, तो बच्चे भी यही सीखेंगे।

हमें अपने घरों को ऐसा माहौल देना चाहिए जहाँ दीन, अच्छे अख़लाक, मोहब्बत और अदब की फिजा हो। अगर हम बच्चों की अच्छी परवरिश करेंगे तो वे बड़े होकर समाज के लिए उपयोगी, अच्छे चरित्र वाले और जिम्मेदार इंसान बनेंगे। लेकिन अगर हमने उनकी परवरिश पर ध्यान नहीं दिया, तो आने वाली पीढ़ी परेशानियों का शिकार हो सकती है। इसलिए हर माता-पिता की जिम्मेदारी है कि वे अपने बच्चों को अच्छा माहौल दें।

जमाअती ख़बरें

बसफी, क्यूटी स्थानीय जमीयत अहले हदीस मधुबनी के तत्वाधान में आयोजित महत्वपूर्ण दावती एवं संगठनात्मक बैठक

रविवार, ५ अप्रैल २०२६ मुताबिक १६ शव्वाल १४४७ हिजरी को औंसी बभनगवां स्थित मस्जिद अहले हदीस में उलमा, दुआत, मुबल्लिगीन और जमाअत के जिम्मेदार लोगों की एक महत्वपूर्ण दावती एवं संगठनात्मक बैठक आयोजित की गई।

दोनों ब्लाकों के सक्रिय एवं कार्यशील इमाम, उलेमा और जिम्मेदार सदस्यों में मौलाना मंजर अहसन सलफी, मौलाना फजलुल्लाह अंसारी सलफी, मौलाना सनाउल्लाह सलफी, मौलाना शमशीर तैमी, मौलाना शरफुद्दीन तैमी, मौलाना सईद अहमद सलफी, मौलाना आरिफ सलफी, मौलाना शरफे आलम नदवी, मौलाना रिजा उल-हुदा सलफी, मौलाना गुलजार तैमी तथा कारी हस्सान सिद्दीकी ने इसमें भाग लिया।

बैठक का उद्देश्य क्षेत्र में दीन और दावत से संबंधित गतिविधियों को संगठित एवं प्रभावशाली बनाना तथा आपसी सहयोग को बढ़ावा देना था। बैठक में निम्नलिखित विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई और महत्वपूर्ण निर्णय लिए गएः

दावती व्यवस्था को मजबूत बनानाः

दावती कार्य को व्यवस्थित एवं प्रभावशाली बनाने के लिए एक मजबूत प्लेटफार्म स्थापित करने पर सहमति हुई, जिसके अंतर्गत सभी गतिविधियाँ संगठित रूप से संचालित की जाएँगी।

मस्जिदों से संपर्क व्यवस्थाः

क्षेत्र की सभी जमाअती मस्जिदों के इमामों, खतीबों और जिम्मेदार व्यक्तियों से निरंतर संपर्क बनाए रखा जाएगा, ताकि दावती स्थिति का आकलन किया जा सके और आपसी सहयोग को बढ़ाया जा सके।

दुरूस एवं खुत्बों का आयोजन

उलेमा-ए-किराम के माध्यम से जुमा के खुत्बों, दुरूसे कुरआन व हदीस तथा सुधारात्मक बयानों का नियमित सिलसिला शुरू करने का निर्णय लिया गया, ताकि लोगों में दीन की समझ और जागरूकता पैदा हो।

संक्षिप्त दावती कार्यक्रम

विभिन्न स्थानों पर छोटे-छोटे दावती कार्यक्रम, इस्लाही बैठकों और विशेष व्याख्यानों का आयोजन किया जाएगा, जिनके लिए उचित प्रचार-प्रसार भी किया जाएगा।

जमाअती मस्जिदों में सुबह और शाम चलने वाले मकतबों को पुनः सक्रिय बनाने के लिए गंभीर प्रयास किए जाएँगे, ताकि बच्चों की दीनी शिक्षा एवं प्रशिक्षण बेहतर हो सके।

जनसंपर्क अभियान

संगठन से जुड़े सभी सदस्यों की यह जिम्मेदारी होगी कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में जनता से घनिष्ठ संपर्क बनाए रखें और दावती संदेश को व्यापक रूप से फैलाने का प्रयास करें।

युवाओं की भागीदारी

युवाओं को दावती और सुध

ारात्मक कार्यों में शामिल करने के लिए विशेष रणनीति तैयार करने पर बल दिया गया, ताकि नई पीढ़ी को दीन से जोड़ा जा सके।

महिलाओं के लिए दीनी कार्यक्रम :

महिलाओं की दीनी शिक्षा एवं प्रशिक्षण के लिए अलग से दुरूस और प्रशिक्षण बैठकों के आयोजन का प्रस्ताव रखा गया और उस पर अमल करने का संकल्प लिया गया।

वित्तीय प्रबंधन :

दावती एवं संगठनात्मक गतिविधियों के लिए आवश्यक खर्च, संसाधन और आर्थिक सहयोग के विषय पर विचार-विमर्श किया गया तथा पारदर्शी व्यवस्था अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया।

मीडिया का उपयोग :

दावती संदेश को व्यापक रूप से पहुँचाने के लिए सोशल मीडिया और अन्य संचार माध्यमों के प्रभावी उपयोग के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

आपसी एकता एवं भाईचारा :

बैठक में इस बात पर विशेष जोर दिया गया कि सभी सदस्य ईमानदारी, एकता और आपसी सहयोग के साथ दावती कार्य करें, ताकि सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो सकें।

बैठक के अंत में सभी प्रतिभागियों ने यह दृढ़ संकल्प व्यक्त किया कि सभी निर्णयों को पूरी निष्ठा और जिम्मेदारी के साथ लागू किया जाएगा तथा क्षेत्र में दावती और सुधारात्मक कार्यों को और अधिक प्रभावशाली बनाया जाएगा। अंत में दुआ के साथ बैठक समाप्त हुई।

(रिपोर्टः शमशीर दाऊद तैमी)

जमीयत अहले हदीस कटिहार के तत्वाधान में हज प्रशिक्षण कार्यक्रम

जमीयत अहले हदीस कटिहार के तत्वावधान में जामा मस्जिद हाजीपुर, कटिहार में दिनांक ४ अप्रैल २०२६ को हज प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया

इस कार्यक्रम में उलेमा-ए-किराम ने हज की महत्ता एवं विशेषता, हज की तैयारी, उमरा का तरीका, हज का तरीका तथा हज के बाद के महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से चर्चा की।

कार्यक्रम में लगभग साठ पुरुष एवं महिला हज और उमरा यात्रियों ने भाग लिया और किताब व सुन्नत की रोशनी में हज के अरकान और तरीकों को सीखा।

इस अवसर पर मस्जिद-ए-नबवी के पूर्व शिक्षक डा० अमानुल्लाह मदनी ने जिला जमीयत अहले हदीस की तरह से हज के संबंध में उठाए गए सवालों के जवाब भी दिए।

कार्यक्रम में मौलाना इनामुल हक मदनी (अमीर, जमीयत अहले हदीस कटिहार), मौलाना मुनीरुद्दीन नदवी (इमाम, जामा मस्जिद हाजीपुर) तथा लेखक डा० रहमतुल्लाह मुहम्मद मूसा सलफी भी उपस्थित रहे और अपने व्याख्यानों से लोगों को लाभान्वित किया।

अंत में हज यात्रियों के बीच हज गाइड भी वितरित किया गया, ताकि उन्हें किसी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े।

(डा० रहमातुल्लाह मुहम्मद मूसा सलफी, नाजिम जमीअत अहले हदीस कटिहार)

Posted On 24-25 Every Month
Posted At LPC, Delhi
RMS Delhi-110006
"Registered with the Registrar of Newspapers for India"

MAY 2026
RNI - 53452/90
P.R.No.DL (DG-11)/8065/2023-25

ISLAH-E-SAMAJ

4116, Urdu Bazar, Jama Masjid, Delhi-110006

अहले हदीस मंज़िल की तामीर व तकमील के सिलसिले में

सम्माननीय अइम्मा, खुतबा, मस्जिदों के संरक्षकों और जमईआत के पदधारियों से पुरजोर अपील व अनुरोध

अहले हदीस मंज़िल में चौथी मंज़िल की ढलाई का काम हुआ चाहता है और अन्य तीनों मंज़िलों की सफाई की तकमील के लिये आप से अनुरोध है कि आने वाले जुमा में नियमित रूप से अपनी मस्जिदों में इसके सहयोग के लिये पुरज़ोर एलान फरमायें और नीचे दिये गये खाते में रकम भेज कर जन्नत में ऊंचा मक़ाम बनाएं और इस सद-क़-ए जारिया में शरीक हों।

सहयोग के तरीक़े (१) सीमेन्ट सरिया, रोड़ी, बदरपुर, रेत (२) नक़द रक़म (३) कारीगरों और मज़दूरों की मज़दूरी की अदायगी (४) खिड़की, दरवाज़ा, पेन्ट, रंग व रोगन का सामान या क़ीमत देकर सहयोग करें और माल व औलाद और नेक कार्यों में बर्कत पाएँ।

Paytm UPI

9899152690@ptaxis

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c No. **629201058685** (ICIC Bank)
Chandni Chowk, Delhi-110006
(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292)
पताः-4116 उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-110006
Ph. 23273407, Fax : 23246613

अपील : सदस्यगण, मर्कज़ी जमीअत अलहे हदीस हिन्द

Total Pages 28